



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2026)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आम के वृक्षों के कायिक विकार एवं उनका वैज्ञानिक प्रबंधन

*डॉ. आर. पी. सिंह, डॉ. आर. एम्. राम, डॉ. अभीक पात्र, डॉ. बी.के. सिंह,
डॉ. हिमांशु सिंह एवं डॉ. आशुतोष कुमार

कृषि विज्ञान केंद्र, नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण (डॉ. आर. पी. सी. ए. यू., पूसा)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: rpskyk.22@gmail.com

आम (*Mangifera indica*) भारत की सबसे महत्वपूर्ण फल फसलों में से एक है और इसे "फलों का राजा" कहा जाता है। इसमें विटामिन A, C और D प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, साथ ही इसका स्वाद, सुगंध और आकर्षक रूप इसे विशेष बनाते हैं। आम फल कैलोरी में कम होता है, इसलिए कैलोरी सेवन कम करने के लिए यह एक उत्तम फल है। आम का पेड़ विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है और यह स्वभाव से मजबूत होता है। इसकी देखभाल अपेक्षाकृत कम प्रबंधन में भी संभव है। आम के कच्चे और पके दोनों फलों का उपयोग इसके विकास के सभी चरणों में किया जाता है। आम की गुठली में भी 8-10% उच्च गुणवत्ता वाला वसा पाया जाता है, जिसका उपयोग साबुन निर्माण में किया जा सकता है। भारत में आम की खेती उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु और बिहार सहित कई राज्यों में की जाती है। आम के उत्पादन में कमी के पीछे अनेक कारण हैं, जिनमें कायिक विकार (Physiological disorder) एक गंभीर समस्या है, जो फल की गुणवत्ता और भंडारण क्षमता को प्रभावित करती है। इस लेख में आम के प्रमुख कायिक विकारों एवं उनके प्रबंधन उपायों पर चर्चा की गई है, जो किसानों को समय पर इन समस्याओं से निपटने और आम की खेती से बेहतर लाभकारी मूल्य प्राप्त करने में सहायक होंगे।

कायिक विकारों के कारण

- सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी एवं तापमान में अचानक परिवर्तन
- खराब मृदा स्थिति
- खेती के दौरान नमी की अपर्याप्त उपलब्धता

कायिक विकार की परिभाषा

कायिक विकार वह अवस्था है, जिसमें फल के आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण भाग या पौधे के अन्य भागों में असामान्यता उत्पन्न हो जाती है, जिससे उत्पादन और गुणवत्ता प्रभावित होती है।

प्रमुख कायिक विकारों का विवरण एवं प्रबंधन यहां पर दिए गए हैं।

आम विकृति (Mango Malformation)/गुम्मा विकार

रोग कारक- *Fusarium moniliformae* var. *subglutinans* नामक फफूंद का संक्रमण।

इसके चलते उत्पादन में 50 से 80% का नुकसान होता है। इसका कारण बड़ा ही जटिल है और 8 से 10 साल पुराने पेड़ पर ज्यादा देखने को मिलता है। गुम्मा रोग दो प्रकार के होते हैं वानस्पतिक गुम्मा और पुष्पीय गुम्मा।

वानस्पतिक गुम्मा- वानस्पतिक गुम्मा रोग अधिकतर नए पौधों में होता है। प्रभावित पौधों में वानस्पतिक बड़त विकृत हो जाती है, पर्व संधियाँ फूल जाती हैं और पर्व छोटे रह जाते हैं। ऐसे विकृत वानस्पतिक गुम्मे में पत्तियां छोटी और पतली होती हैं तथा पौधे के ऊपरी भाग में गुच्छे का रूप धारण करती हैं। इस लक्षण को "बंची टाप" कहते हैं।

बड़े पौधों में भी इस प्रकार की लक्षण दिखाई देते हैं किंतु यह छोटे पौधों की तुलना में काफी कम पाए जाते हैं। पुष्पीय गुम्मा- पुष्पीय गुम्में में बौर के मुख्य पर्व छोटे रह जाते हैं तथा पुष्प गुच्छे की गौण शाखाओं की लंबाई भी कम रह जाती है जिससे फूल गुच्छे के रूप में दिखते हैं। पुष्प कलियां वानस्पतिक कालिकाओं में बदल जाती हैं साथ ही पतली छोटी पत्तियां निकलती हैं जिससे बौर काफी कसा हुआ नजर आता है। ऐसे बौरों में फूल की कलियां बहुत कम खुलती हैं और हरी ही रह जाती हैं। कुछ पुष्पीय गुम्में घने नहीं होते बल्कि इसमें पर्व लंबे होते हैं। अतः यह सामान्य बौर से अधिक लंबे होते हैं तथा इसमें फूल दूर-दूर लगते हैं। पुष्प गुच्छों में आमतौर पर फल नहीं लग पाते हैं।

प्रबंधन:

1. रोग ग्रसित बौर, प्ररोह या डालियों को छांट कर जला देना चाहिए जिससे यह रोग बढ़ता नहीं है।
2. नेपथिलिक् एसिटिक एसिड 200 पी पी एम (1 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी में) का अक्टूबर के पहले सप्ताह में छिड़काव करने तथा दिसंबर के आखिरी सप्ताह या जनवरी या फरवरी में निकले हुए नई विकृत कलियों/पुष्पों/बौर को तोड़कर (डिब्लॉसमिंग) नष्ट करने से इस रोग में कमी आती है।
3. जिंक (100 पी पी एम), कॉपर (40 पी पी एम) एवं फफूंदनाशी कार्बेन्डाज़िम (0.1%) के दो छिड़काव नवंबर-दिसंबर में प्रयोग करें, नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैश युक्त उर्वरकों का सूक्ष्म पोषक तत्वों के साथ संतुलित प्रयोग, प्रत्येक वर्ष गुम्मा ग्रसित बौर को तोड़ना एवं पौध बनाने हेतु रोग ग्रसित मात्रा पौधों का ना लेना एक प्रभावी कदम है।
4. साइक्लोहेक्सिमाइड एवं कल्टार (पैक्लोब्यूटाजाल) का प्रयोग से भी गुम्मा रोग का नियंत्रण किया जा सकता है।

आम में अनियमित फलन (वैकल्पिक फलन)

यह विकार आम की उत्पादकता कम करने में प्रभावी है। आम की अधिकतर व्यावसायिक किस्म में अनियमित या एकांतर फलन की समस्या होती है जिससे एक वर्ष फल आता है और दूसरे वर्ष फल नहीं आता है। इस विकार को "द्विवर्षीय फलन" भी कहते हैं। उत्तर भारत में उगाई जाने वाली किस्मों विशेषकर दशहरी, लंगड़ा व चौसा अनियमित फलन विकार से ग्रसित होती हैं, जबकि दक्षिण भारतीय किस्मों में नीलम, तोतापरी आदि नियमित फलन देती हैं। ऐसा समझा जाता है कि जब पेड़ 1 वर्ष अधिक फल देता है तो उसमें पोषक तत्वों की कमी आ जाती है जिससे कार्बोहाइड्रेट:नाइट्रोजन का संतुलन मुख्य है, और इस कारण पेड़ नई कोपलें उगाने में सक्षम नहीं रह जाता है। परिणामतः दूसरे वर्ष फलन कम या नहीं हो पाती है। इस विकार का कारण पैतृक (अनुवांशिक कारण), पादप दैहिकी, वातावरण जनित, कृषिगत क्रियाएं, किस्मों में अंतर, पोषण की कमी, अधिक फल भार, वृद्धि नियामक का असंतुलन माना जाता है। अधिक वर्षा, उच्च आर्द्रता, कम तापमान, पुष्पन के समय काफी दिन कोहरा रहना फलन वर्ष को अफलन वर्ष में बदल देता है।

प्रबंधन:

1. फलन वर्ष में पछेती (मार्च - अप्रैल) आये हुए बौरों (पुष्प गुच्छों) को तोड़ देना चाहिए यानी 'ऑन ईयर' में फल भार कम करने के लिए फूलों की छंटाई (डिब्लॉसमिंग) करें, जिससे 'ऑफ ईयर' में संतुलन बना रहे।
2. कल्टार (पैक्लोब्यूटाजाल) का जो एक अंतः प्रवाही वानस्पतिक पादप वृद्धि नियामक है। प्रति वृक्ष 3.2 मिली लीटर प्रति मीटर छाया क्षेत्र की दर से (10 से 15 लीटर पानी में मिलाकर) तने से डेढ़ से दो मीटर दूरी पर बनाई गई नाली (30 सेंटीमीटर चौड़ी एवं 20 सेंटीमीटर गहरी) में बौर निकलने के 90 से 100 दिन पूर्व या सितंबर माह में प्रयोग करना चाहिए।
3. अगर वृक्ष की आयु 25 वर्ष से अधिक हो तो कल्टार (पैक्लोब्यूटाजाल) की संस्तुत मात्रा पानी में घोलकर दो भागों में बाँटकर, एक भाग उर्वरक नाली के पास बनी नाली में एवं शेष भाग छाया क्षेत्र से 25 से 30 सेंटीमीटर अंदर की तरफ गोलाई में नाली बनाकर प्रयोग करना चाहिए।
4. कल्टार (पैक्लोब्यूटाजाल) के प्रयोग के बाद कम से कम 25 से 30 दिन तक पेड़ के चारों तरफ पर्याप्त नमी रखें ताकि अधिक से अधिक मात्रा का अवशोषण हो सके।
5. नियमित फलन वाली किस्म (आम्रपाली, नीलम) का विस्तृत तौर पर उद्यानिकरण करना चाहिए।

- उर्वरक के संस्तुत मात्रा का प्रयोग जुलाई में या कल्टार के प्रयोग के एक से दो माह पूर्व करते वक्त 25 से 50% वृद्धि लाने से कल्टार के प्रयोग उपरान्त अतिरिक्त वृद्धि एवं पौधों का स्वास्थ्य बनाए रखा जा सकता है।
- 0.1% यूरिया के साथ एथेफॉन 200 पीपीएम की सांद्रता पूरे वर्ष नियमित फूल लाने में प्रभावी पाई गई।
- बलुई मिट्टी में कल्टार का संस्तुत मात्रा का 50% ही देना चाहिए।

फूल एवं फलों का गिरना

आम के फल जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में गिरते हैं, जिससे बागवानों को आर्थिक हानि होती है। पेड़ में एवं बौरों की तुलना में फलों के लगने का अनुपात बहुत कम होता है। अधिकांश फल लगने के बाद ही गिर जाते हैं। आम के फल बहुत छोटी अवस्था (पिन हेड), फल बनने के बाद एवं पूर्ण विकसित (मई माह में), अवस्थाओं में गिरते हैं। विकसित फलों का गिरना अधिक आर्थिक हानि पहुंचता है। फलों के गिरने की गति विभिन्न किस्मों में अलग-अलग होती है। लंगड़ा किस्म में फल अधिक गिरते हैं। फलों के गिरने के बहुत से कारण हैं जिनमें भ्रूण का पतन, पानी एवं पोषण में कमी और हार्मोन का असंतुलन मुख्य है।

प्रबंधन

- फल बनते समय खेत में हल्की सिंचाई कर दें।
- फलों को गिरने से रोकने के लिए अलार (B-nine) @ 100 पी.पी.एम. या एन ए ए या प्लेनोफिक्स (200 पी पी एम) का 90 मिलीलीटर को एक ड्रम पानी यानी 200 लीटर में घोलकर छिड़काव आम के फलों के मटर के आकार के समय लाभकारी सिद्ध हुआ है। इसमें टीपाल या (साबुन का घोल 2 से 3 मिलीलीटर) मिलना लाभप्रद होता है।
- आधे पके फल का 20 से 50 मिलीग्राम/लीटर तक की सांद्रता पर एनएए (NAA) या 2,4-डी (2,4-D) का छिड़काव करें।
- यूरिया या पोषक मिश्रण (KNO₃, सूक्ष्म पोषक तत्व परिसर) के संयोजन में ऑक्सिन के साथ उपचार की भी सिफारिश की गई है।
- व्यावसायिक किस्मों में, 'लंगड़ा' फल गिरने के प्रति अधिक संवेदनशील है, जबकि 'दशहरी' सबसे कम है।

आंतरिक विगलन

सबसे पहले फलों के निचले हिस्से में जलसिक्त, सलेटी रंग के धब्बे बन जाते हैं, बाद में ये धब्बे बढ़कर गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं। इसमें ऊतक विघटन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है जिससे गूदा दिखने लगता है। फल फट जाता है और अंदर के ऊतक दिखाई देते हैं जिसमें सड़न प्रतीत होती है। साथ ही फटे भाग से पीले रंग की बूंदें निकलने लगती हैं। गुठली भी भूरे रंग की दिखती है और फल पेड़ से गिर जाते हैं।

प्रबंधन

- इस विकार को नियंत्रण में रखने के लिए बोरेक्स का 500 ग्राम प्रति वृक्ष के हिसाब से थाले में प्रयोग या बोरेक्स (एक प्रतिशत) का पत्तियों पर छिड़काव करना लाभदायक होता है। जब फलों का आकार मटर के दाने के बराबर हो तब पहला छिड़काव तथा 15 दिनों के बाद दूसरा छिड़काव करना चाहिए।

कोयलिया विकार

यह रोग उन्ही बागों में देखा गया है जो किसी ईट के भट्टे के आसपास (भट्टों से निकलने वाली गैसों जैसे-कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, एथिलीन) स्थित होते हैं। जैसे ही आम थोड़ा बड़ा होता है इसमें इस विकार के लक्षण दिखाई देते हैं। फल के निचले हिस्से में पहले निशान दिखाई देता है जो धीरे-धीरे बढ़ता है फिर काला पड़ जाता है और फल के निचले हिस्से में फैल जाता है। फल का यह भाग कड़ा हो जाता है और फल का बढ़ना रुक जाता है। कुछ किस्म जैसे दशहरी में फलों का निकला छोर पतला हो जाता है तथा ज्यादा हरा दिखता है। फल की बढ़त भी रुक जाती है। इसका विशेष लक्षण है कि निचले छोर के साइनस पर दो-तीन या उससे अधिक जगहों पर पांडुरता आ जाता है।

प्रबंधन

1. इस विकार की रोकथाम के लिए एक प्रतिशत बोरेक्स के 1% घोल (2 किलोग्राम बोरेक्स प्रति 200 लीटर पानी में मिलाकर) का छिड़काव तीन बार करें (फूल आने से पहले, फूल अवस्था में और फल सेट पर) तब करें जब फल मटर के दाने के बराबर हो, इसके बाद दो छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर और करना चाहिए। छिड़काव घोल में टीपाल या साबुन का घोल अवश्य मिला लें।
2. आम का बाग ईट के भट्टों से 5 से 6 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर दक्षिण दिशा में लगाने से रोग को काफी हद तक कम किया जा सकता है।
3. मटर के आकार पर बोर्डो मिश्रण 2:2:250 का छिड़काव करें और 20 दिन बाद फल परिपक्वता तक दोहराएं।
4. चिमनी की ऊंचाई 15-18 मीटर तक बढ़ाएँ।
5. धुलाई का सोडा (0.5%), कास्टिक सोडा (0.8%) के मिश्रण का छिड़काव भी लाभप्रद पाया गया है

गुच्छेदार फलन/झुमका विकार

इस विकार में आम के छोटे-छोटे कई फल (चार से पांच) मंजरी के सिरे पर बनते हैं जोकि देखने में झुमके की तरह लगते हैं। ऐसे फलों का रंग सामान्य फलों की अपेक्षा कुछ अधिक गहरा होता है तथा इन फलों का आकार भी नीचे की ओर कुछ घूमा होता है। ऐसे फल मंजरी के सिरे पर अधिक दिनों तक रहते हैं। इनके अधिक समय तक बौर पर लगे रहने से ऐसा प्रतीत होता है कि फसल अच्छी होगी किंतु इनकी बढत रुक जाती है और फिर थोड़े दिनों के उपरांत यह फल गिर जाते हैं। ऐसे फलों में बीज भी विकसित नहीं होता है। इस रोग का प्रमुख कारण अधिक कीटनाशकों के प्रयोग, तापमान का आकस्मिक उतार-चढ़ाव तथा परगना परागण का अभाव माना गया है।

प्रबंधन

1. जब फूल खिले हो तो किसी भी प्रकार के कीटनाशक या फफूदीनाशक का छिड़काव नहीं करना चाहिए। परागणकर्ताओं को आकर्षित करने के लिए पूर्ण फूल आने की अवस्था पर गुड @ 10 प्रतिशत का छिड़काव किया जा सकता है।
2. अक्टूबर और नवंबर के दौरान 100 पीपीएम एनएए (NAA) का छिड़काव पुष्पगुच्छ विकास का ध्यान रखेगा।
3. फूल खिलने की अवस्था में परगना सहायक कीटों की अधिक संख्या रखने का प्रयास करना चाहिए।
4. नेपथिलिक् एसिटिक एसिड 300 पी पी एम के छिड़काव से भी इस विकार को कम कर सकते हैं।
5. पुराने बागों में, कुछ शाखाओं को बॉम्बे ग्रीन जैसी परागण वाली किस्मों से टॉप वर्क किया जाना चाहिए।
6. फूल आने के समय बाग में मधुमक्खी बक्सों की स्थापना करें।

स्पंजी ऊतक (Spongy Tissue)

यह एक आंतरिक कायिक विकार है, जिसमें फल का गूदा ठीक से नहीं पकता और स्वाद खराब हो जाता है। बाहर से फल सामान्य दिखता है, पर काटने पर समस्या दिखाई देती है। यह मुख्यतः अलफांसो किस्म में पाई जाती है। इसका मुख्य कारण अधिक तापमान के कारण पकने वाले एंजाइमों की निष्क्रियता, कटाई के बाद फलों का धूप में अधिक समय तक रहना।

प्रबंधन

1. फलों की तुड़ाई 3/4 परिपक्व अवस्था में करें।
2. कटाई के बाद 10-15°C तापमान पर 10-18 घंटे तक भंडारण करने से समस्या कम होती है।
3. काले पॉली-एथिलीन मल्व का उपयोग।
4. रत्ना, अर्का पूनीत और अर्का अरुण आदि जैसी प्रतिरोधी किस्में उगाएं।
5. बागों में सॉड कल्चर (घास आवरण) अपनाकर या लेग्यूम को कवर फसल के रूप में उगाकर या गड्डों में मल्लिचंग अपनाकर और फल विकास के दौरान मिट्टी की नमी को क्षेत्र क्षमता के निकट रखने से आम के फलों में स्पंजी ऊतक विकास की घटना कम हो जाती है।

पाले का प्रकोप

छाल का फटना जोकि शुरुआत में दिखाई नहीं देता पर पेड़ जब मरने या सूखने लगता है तभी दिखाई पड़ता है। फटी हुई छाल से गोंद का रिसाव, नई टहनियां का मर जाना और पत्तियों, छोटी कलियों व बौरों का जला सा प्रतीत होना और अंततः पेड़ का पूरी तरह सूख जाना इसके विशेष लक्षण हैं।

प्रबंधन

1. आम के छोटे पौधों को पाले से बचाने के लिए सूखी घास से पौधों को कुछ इस तरह ढकना चाहिए कि पूर्व की दिशा से धूप और हवा बराबर मिलती रहे। नए पौधों को जाड़े के महीनों में फूस या सूखी घास से ढक देना चाहिए।
2. पाले के समय यदि सिंचाई की जाए तो पौधों को बचाया जा सकता है। फुहारे से के रूप में सिंचाई और पौधों पर ऊपर से सिंचाई अधिक ठंड के समय लाभदायक है।
3. मुख्य तने पर गोबर तूतिया (कापर सल्फेट) का लेप करना चाहिए।

क्लोराइड की अधिकता

इसका मुख्य लक्षण आम की पत्तियों का सिरे से आरंभ होकर पत्तियों के किनारों तक सूखना होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पत्तियों के सिरे झुलस गए हैं। सूखे हिस्से लाल ईंट के रंग के नजर आते हैं। यह रोग दूर से ही पहचाना जा सकता है।

प्रबंधन

1. ऐसी खाद का प्रयोग ना करें जिसमें क्लोराइड हो इसकी जगह पोटेशियम सल्फेट का उपयोग करें।
2. फफूंदनाशक कापर ऑक्सिक्लोराइड का छिड़काव ऐसे पौधों पर नहीं करना चाहिए।
3. गिरी हुई पत्तियों को एकत्र करके खेत से हटा देना चाहिए।
4. पौधे के आसपास पानी न लगने दें, जल निकास का उचित प्रबंध करें।

फल-फटन विकार**छिलके का फटना**

फलों के छिलके का भौतिक रूप से कमजोर होकर फटना क्यूटिकल का टूटना कहलाता है यह मुख्यतया आम के लंगड़ा (मालदा) किस्म में पाया जाता है।

गूदे का फटना

इस प्रकार की फटन में फलों का गूदा भी फट जाता है तथा पूरा फल खुल जाता है। साथ-साथ फल में फटे हुए ऊपरी भाग से गोद निकलने लगता है तथा गुठली बाहर से ही दिखाई देने लगती है। यह फटन दशहरी किस्म की एक प्रमुख समस्या बन गई है।

सितारे के रूप में फटना

इससे प्रभावित फल सितारे के रूप में फटते हैं। फटना मुख्यतः मध्य भाग से शुरू होकर अंदर की तरफ गहरा हो जाता है तथा यह भाग विभिन्न रोगाणुओं के प्रवेश से काले रंग में बदल जाता है। इस प्रकार का फटन आम में बहुत कम होता है लेकिन कभी-कभी आम की आम्रपाली एवं दशहरी किस्म में पाया गया है।

आम के गूदे का फटना मुख्यतः आंतरिक कारकों जैसे फलत के समय पानी की कम उपलब्धता, भारी वर्षा से अत्यधिक नमी का होना, अधिक पानी के अवशोषण से भी छिलका फटने लगता है। पोषक तत्वों की कमी (कैल्शियम एवं बोरान) भी फलों के फटने में अहम भूमिका अदा करते हैं। सफेदा और रामकेला फल फटन के प्रति सहनशील होते हैं।

प्रबंधन

1. आम के बाग में फलों के वृद्धि व विकास के दौरान नियंत्रित एवं नियमित सिंचाई व्यवस्था बहुत महत्व रखती है। साधारणतया भारी वर्षा के बाद सूखा या सूखा के बाद भारी वर्षा फलों के फटने का मुख्य कारण होता है।
2. मई से जून माह में 15 दिन के अंतराल पर नियमित सिंचाई दें।
3. अधिक वर्षा व चिकनी मिट्टी वाले क्षेत्रों में जल निकास की समुचित व्यवस्था करें।

4. खास कर लंगड़ा किस्म के बगीचों में बोरान तत्व की पूर्ण पूर्ति जरूरी होती है।
5. बोरेक्स 500 ग्राम प्रति वृक्ष से मृदा उपचार दशहरी आम के बगीचे में अवश्य करें।
6. फलों के मटर के दाने के आकार की अवस्था पर 15 दिन पर 8 से 10 ग्राम बोरेक्स प्रति लीटर पानी की दर से दो या तीन छिड़काव हल्की और बलुई मृदा में अवश्य करें।
7. आम में फल-फटन रोकने के लिए 150 से 200 मिलीग्राम जिब्रेलिक एसिड प्रति लीटर पानी की दर से 15 दिन के अंतराल पर दो पर्णिय छिड़काव भी कर सकते हैं।

गूमड़ विकार (वर्ल डिसऑर्डर)

यह आम का एक नया विकार है। इसके अंतर्गत 15 से 20 वर्ष के आयु के वृक्षों में मुख्य तने एवं प्राथमिक शाखों पर एक प्रकार की असामान्य वृद्धि होने लगती है जो बाद में अनियंत्रित रूप लेकर काष्ठीय विकार में परिवर्तित होकर गूमड़ के रूप में दिखाई पड़ती है। ये गूमड़, आकार में वृद्धि करते रहते हैं तथा पूरे वृक्ष को प्रभावित कर सकते हैं। लंगड़ा (मालदा) प्रजाति इस विकार से अधिक प्रभावित होती है जबकि चौसा प्रजाति में कम प्रभाव पड़ता है। स्वस्थ वृक्षों की अपेक्षा इस रोग से प्रभावित वृक्षों की उपज कम हो जाती है जिस कारण उत्पादकों को हानि होने लगती है। आम की अन्य व्यावसायिक प्रजातियां जैसे दशहरी, मुंबई ग्रीन, आम्रपाली, मल्लिका आदि इस विकार से मुक्ति पाई गई हैं।

प्रबंधन:

1. चूंकि इस विकार का वास्तविक कारण अभी तक ज्ञात नहीं हो पाया है, अतः इसमें समन्वित प्रबंधन की आवश्यकता पड़ती है।
2. अक्टूबर की प्रथम पक्ष में कटाई-छटाई के समय सर्वप्रथम आरी की सहायता से तने के प्रभावित भागों को काट देना चाहिए। कटे हुए भाग पर चौबटिया पेस्ट (कॉपर कार्बोनेट: एक भाग + रेड लेड: एक भाग + सवा भाग: कच्चा अलसी का तेल) अथवा कॉपर ऑक्सिक्लोराइड पेस्ट या (250 मिलीलीटर अरंडी के तेल व आवश्यकतानुसार जल में एक किलोग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड) का लेपन करते हैं।
3. इस लेप के साथ संगत कीटनाशक का भी प्रयोग किया जा सकता है।

वृक्ष पर बंदा का प्रकोप

यह आम के वृक्ष पर उगता है जहां पर यह पेड़ पर लगता है वहीं गांठ बन जाती है इसकी पत्तियां अंडाकार होती हैं तथा फूल पीले लाल होते हैं परजीवी की हिस्टोरिया थाने में प्रवेश करती है जिससे यह अपना भोजन लेता है

प्रबंधन

परजीवी ग्रसित डालों को नीचे से काट देना चाहिए तथा कटे भाग पर कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का लेप लगाना चाहिए।